

Dr. Kumari Priyanka

History department

H. D jain college, ara

Notes for pg sem 1

मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास लेखन की प्रवृत्तियों का मूल्यांकन कीजिए।

भूमिका (Introduction):

प्राचीन यूनान और रोम में जहाँ इतिहास लेखन तार्किक, यथार्थवादी और मानवकेंद्रित था, वहीं रोम के पतन (5वीं सदी ईस्वी) के बाद यूरोप में **मध्यकालीन युग (5वीं-15वीं सदी)** आरंभ हुआ। इस काल में **ईसाई धर्म और चर्च** यूरोपीय जीवन का केंद्र बन गया। फलतः इतिहास लेखन भी धार्मिक दृष्टिकोण से प्रभावित हुआ। इस युग में इतिहास का उद्देश्य सत्य की खोज न होकर **ईश्वर की इच्छा और दैवी योजना (Divine Plan)** का वर्णन बन गया।

1. मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास लेखन की प्रमुख विशेषताएँ (Main Characteristics):

❖ (क) **धार्मिक दृष्टिकोण (Theological Approach):**

- इतिहास को **ईश्वर की इच्छा की अभिव्यक्ति** माना गया।
- मानव की घटनाएँ और युद्ध भी “Divine Will” या “Providence” का परिणाम माने गए।
- ऐतिहासिक घटनाओं की व्याख्या धार्मिक सिद्धांतों के आधार पर की गई।

❖ (ख) **चर्च का प्रभाव (Influence of the Church):**

- इतिहास लेखन **पादरियों और मठों (Monasteries)** द्वारा किया गया।
- मठों में रखे गए “**Chronicles**” (**वार्षिक घटनावली**) प्रमुख ऐतिहासिक ग्रंथ बने।
- लेखन में बाइबिल, संतों के जीवन और चमत्कारों पर अधिक ध्यान दिया गया।

❖ (ग) **ऐतिहासिक वस्तुनिष्ठता का अभाव (Lack of Objectivity):**

- घटनाओं का तर्कसंगत विश्लेषण न होकर **दैवी चमत्कारों और धार्मिक दृष्टिकोणों** पर आधारित विवरण दिए गए।
- इतिहास की विश्वसनीयता से अधिक उसकी धार्मिक उपयोगिता महत्वपूर्ण मानी गई।

◆ (घ) सार्वभौमिक इतिहास की धारणा (Universal History Concept):

- इतिहास को आदम से लेकर मसीह और मसीह से वर्तमान तक एक रेखीय (linear) रूप में देखा गया।
- इसे “ईश्वर की योजना में मानव की भूमिका” के रूप में समझाया गया।
- सेंट ऑगस्टीन (St. Augustine) ने इसे “The City of God” और “The City of Man” के संघर्ष के रूप में प्रस्तुत किया।

◆ (ङ) नैतिक और धार्मिक उद्देश्य (Moral and Religious Purpose):

- इतिहास का लक्ष्य पाठकों में धर्मनिष्ठा, नैतिकता और भक्ति उत्पन्न करना था।
- इसलिए इतिहास लेखन शिक्षाप्रद (didactic) हो गया।

◆ (च) कालक्रमिक (Chronological) लेकिन विश्लेषणहीन लेखन:

- घटनाओं को वर्षवार क्रम में लिखा गया परन्तु उनके कारण-परिणाम का विश्लेषण नहीं किया गया।
- उदाहरण: *Anglo-Saxon Chronicle*, *Ecclesiastical History of the English People* (Bede)।

2. प्रमुख मध्यकालीन इतिहासकार (Major Medieval Historians):

1. सेंट ऑगस्टीन (St. Augustine) – “City of God”

- इतिहास को ईश्वर की योजना का अंग बताया।
- मानव इतिहास को दैवी न्याय की प्रक्रिया के रूप में देखा।

2. बीड (Bede, 673–735)

- कृति: *Ecclesiastical History of the English People*
- इंग्लैंड के धार्मिक विकास का वर्णन किया।

3. ओटो ऑफ़ फ़्राइसिंग (Otto of Freising)

- ईश्वर की इच्छा के माध्यम से साम्राज्यों के उदय-पतन की व्याख्या की।

4. क्रोमवेल और मठ इतिहासकार (Monastic Chroniclers)

- विभिन्न मठों में “Chronicles” तैयार किए गए जो स्थानीय घटनाओं का संग्रह हैं।

3. मध्यकालीन इतिहास लेखन की सीमाएँ (Limitations):

1. धर्मग्रंथों पर अत्यधिक निर्भरता – बाइबिल को अंतिम सत्य माना गया।
2. तार्किकता और साक्ष्य का अभाव – अनुभव और प्रमाण के स्थान पर विश्वास को प्राथमिकता।
3. राजनीतिक और सामाजिक घटनाओं की उपेक्षा – केवल धार्मिक विषयों पर बल।
4. पक्षपात और अलौकिकता – घटनाओं में चमत्कार और ईश्वरीय तत्वों का अंधविश्वास।

5. **साहित्यिकता और विश्लेषण की कमी** – इतिहास का स्वरूप विवरणात्मक रहा, विश्लेषणात्मक नहीं।

4. परिवर्तन की दिशा (Transition):

- 12वीं-13वीं सदी के बाद यूरोप में **राष्ट्रवाद, शिक्षा, व्यापार और पुनर्जागरण (Renaissance)** का प्रभाव बढ़ा।
- परिणामस्वरूप इतिहास लेखन धार्मिक से **मानवकेंद्रित और तर्कशील** बनने लगा।
- रान्के (Ranke) और एनाल स्कूल जैसी प्रवृत्तियाँ इन्हीं परिवर्तनों की परिणति थीं।

5. मूल्यांकन (Evaluation):

मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास लेखन का मूल्यांकन करते हुए कहा जा सकता है कि –

- यह युग वस्तुनिष्ठ इतिहास की दृष्टि से पिछड़ा हुआ था, परंतु
- इसने **नैतिकता, धर्म, और मानव के आध्यात्मिक विकास** को इतिहास के केंद्र में रखा।
- यह काल “इतिहास के धार्मिक युग” के रूप में जाना जाता है, जिसने पुनर्जागरण काल के **आधुनिक इतिहास लेखन** की पृष्ठभूमि तैयार की।

 निष्कर्ष (Conclusion):

मध्यकालीन यूरोपीय इतिहास लेखन की प्रवृत्तियाँ धार्मिक, नैतिक और ईश्वरकेंद्रित थीं।

यह युग यद्यपि वैज्ञानिक विश्लेषण से रहित था, परंतु इसने यूरोपीय चिंतन में “नैतिक उद्देश्य” की भावना को जीवित रखा।

इसी धार्मिक इतिहास दृष्टि ने आगे चलकर पुनर्जागरण और आधुनिक काल में **मानवतावादी, तार्किक और वस्तुनिष्ठ इतिहास लेखन** की राह खोली।

संक्षेप में:

“मध्यकालीन इतिहास लेखन आस्था की दृष्टि से समृद्ध था, परंतु विवेक की दृष्टि से सीमित।”